Downloaded from www.studiestoday.com

प्रश्न १-श्रम बिभाजन किसे कहते हैं ?

उत्तर: श्रम विभाजन का अर्थ है– मानवोपयोगी कार्यों का वर्गीकरण करना| प्रत्येक कार्य को कुशलता से करने के लिए योग्यता के अनुसार विभिन्न कामों को आपस में बाँट लेना | कर्म और मानव-क्षमता पर आधारित यह विभाजन सभ्य समाज के लिए आवश्यक है |

प्रश्न २ - श्रम विभाजन और श्रमिक-विभाजन का अंतर स्पष्ट कीजिए |

उत्तर- श्रम विभाजन में क्षमता और कार्य-कुशलता के आधार पर काम का बँटवारा होता है, जबकि श्रमिक विभाजन में लोगों को जन्म के आधार पर बाँटकर पैतृक पेशे को अपनाने के लिए बाध्य किया जाता है| श्रम-विभाजन में व्यक्ति अपनी रुचि के अनुरूप व्यवसाय का चयन करता है | श्रमिक-विभाजन में व्यवसाय का चयन और व्यवसाय-परिवर्तन की भी अनुमति नहीं होती, जिससे समाज में ऊँच नीच का भेदभाव पैदा करता है, यह अस्वाभाविक विभाजन है |

प्रश्न ३ –लेखक ने किस बात को विडम्बना कहा है ?

उत्तर : लेखक कहते हैं कि आज के वैज्ञानिक युग में भी कुछ लोग ऐसे हैं जो जातिवाद का समर्थन करते हैं और उसको सभ्य समाज के लिए उचित मानकर उसका पोषण करते हैं| यह बात आधुनिक सभ्य और लोकतान्त्रिक समाज के लिए विडम्बना है |

प्रश्न ४ : भारत में ऐसी कौन-सी व्यवस्था है जो पूरे विश्व में और कहीं नहीं है ?

उत्तर: लेखक के अनुसार जन्म के आधार पर किसी का पेशा तय कर देना, जीवनभर एक ही पेशे से बँधे रहना, जाति के आधार पर ऊँच-नीच का भेदभाव करना तथा बेरोजगारी तथा भुखमरी की स्थिति में भी पेशा बदलने की अनुमति न होना ऐसी व्यवस्था है जो विश्व में कहीं नहीं है |

अध्ययन सामग्री

कक्षा बारहवीं - वितान भाग-2

वितान भाग -२ पुस्तक में से प्रश्नपत्र में तीन प्रकार के प्रश्न पूछे जाएँगे -

प्रश्न १२. अति लघूत्तरात्मक तीन प्रश्नों में से दो के उत्तर देने हैं| निर्धारित अंक - २ * २ = ४

प्रश्न १३. दो निबंधात्मक प्रश्नों में से एक प्रश्न का उत्तर| निर्धारित अंक – ५

प्रश्न १४. तीन लघूत्तरात्मक प्रश्नों में से दो प्रश्नों के उत्तर| निर्धारित अंक – ३ * २ = ६

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

<u>अधिक अंक प्राप्ति हेतु ध्यान देने योग्य बातें –</u>

१. पूरा पाठ पढ़ें तथा पाठ की विषयवस्तु, प्रमुख पात्र तथा संदेश की ओर अवश्य ध्यान दें |
२. प्रश्नों के उत्तर देते समय अनावश्यक न लिखें| प्रश्न को ध्यानपूर्वक पढ़कर, उसका सटीक उत्तर दें |
३. शब्दसीमा का ध्यान रखें |
४. अंकों के अनुसार उत्तर लिखें |
५. पांच अंक वाले उत्तरों में विभिन्न बिंदुओं को उदाहरण सहित प्रस्तुत करें |

<u>पाठ 1सिल्वर वैडिंग – मनोहर श्याम जोशी</u>

<u>पाठ का सार</u>-सिल्वर वेडिंग' कहानी की रचना **मनोहर श्याम जोशी** ने की है| इस पाठ के माध्यम से **पीढ़ी के अंतराल का मार्मिक चित्रण** किया गया है| आधुनिकता के दौर में, यशोधर बाबू**परंपरागत मूल्यों** को हर हाल में जीवित रखना चाहते हैं| उनका **उसूलपसंद** होना दफ्तर एवम घर के लोगों के लिए सरदर्द बन गया था | यशोधर बाबू को दिल्ली में अपने पाँव जमाने में **किशनदा** ने मदद की थी, अतः वे उनके आदर्श बन गए|

दफ्तर में विवाह की पच्चीसवीं सालगिरह के दिन ,दफ्तर के कर्मचारी, मेनन और चड्ढा उनसे जलपान के लिए पैसे माँगते हैं | जो वे बड़े अनमने ढंग से देते हैं क्योंकि **उन्हें फिजूलखर्ची पसंद नहीं** |यशोधर

बाबू के तीन बेटे हैं| बड़ा बेटा भूषण, विज्ञापन कम्पनी में काम करता है| दूसरा बेटा आई. ए. एस. की तैयारी कर रहा है और तीसरा छात्रवृति के साथ अमेरिका जा चुका है| बेटी भी डाक्टरी की पढ़ाई के लिए अमेरिका जाना चाहती है, वह विवाह हेतु किसी भी वर को पसंद नहीं करती| यशोधर बाबू**बच्चों की तरक्की से खुश हैं किंतु परंपरागत संस्कारों के कारण वे दुविधा में** हैं| उनकी पत्नी ने स्वयं को बच्चों की सोच के साथ ढाल लिया है| आधुनिक न होते हुए भी, बच्चों के ज़ोर देने पर वे अधिक माडर्न बन गई है|

बच्चे घर पर सिल्वर वेडिंग की पार्टी रखते हैं, जो यशोधर बाबू के उसूलों के खिलाफ था| उनका बेटा उन्हें ड्रेसिंग गाउन भेंट करता है तथा सुबह दूध लेने जाते समय उसे ही पहन कर जाने को कहता है, जो उन्हें अच्छा नहीं लगता| बेटे का ज़रूरत से ज़्यादा तनख्वाह पाना, तनख्वाह की रकम स्वयं खर्च करना, उनसे किसी भी बात पर सलाह न माँगना और दूध लाने का जिम्मा स्वयं न लेकर उन्हें ड्रेसिंग गाउन पहनकर

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

दूध लेने जाने की बात कहना जैसी बातें, यशोधर बाबू को बुरी लगती है| जीवन के इस मोड़ पर **वे स्वयं को अपने उसूलों के साथ अकेले पाते हैं** |

<u>प्रश्नोत्तर -</u>

प्रश्न १. अपने घर और विद्यालय के आस-पास हो रहे उन बदलावों के बारे में लिखें जो सुविधाजनक और आधुनिक होते हुए भी बुजुर्गों को अच्छे नहीं लगते। अच्छा न लगने के क्या कारण हो सकते हैं ?

उत्तरः **आधुनिक युग परिवर्तनशील एवं अधिक सुविधाजनक है**। आज के युवा,**आधुनिकता और परिवर्तनशीलता को महत्त्व** देते हैं इसीलिए वे नई तकनीक और फैशन की ओर आकर्षित होते हैं। वे तत्काल नयी जानकारियाँ चाहते हैं, जिसके लिए उनके पास कम्प्यूटर, इन्टरनेट एवं मोबाइल जैसे आधुनिक तकनीकी साधन हैं। इनके माध्यम से वे कम समय में ज्यादा जानकारी एकत्र कर लेते हैं। घर से विद्यालय जाने के लिए अब उनके पास बढ़िया साईकिलें एवं मोटर साईकिलें हैं। आज युवा लड़के और लड़कियों के बीच का अन्तराल काफी कम हो गया है। पुराने जमाने में लड़कियाँ-लड़कों के साथ पढ़ना और मिलना-जुलना ठीक नहीं माना जाता था जैसे आज के परिवेश में है। युवा लड़कों और लड़कियों द्वारा अंग प्रदर्शन आज आम बात हो गई है। वे एक साथ देर रात तक पार्टियाँ करते हैं। इन्टरनेट के माध्यम से असभ्य जानकारियाँ प्राप्त करते हैं। ये सारी बातें उन्हें आधुनिक एवं सुविधाजनक लगती हैं।

दूसरी ओर इस तरह की आधुनिकताबुज़र्गों को रास नहीं आतीक्योंकि जब वे युवा थे,उस समय संचार के साधनों की कमी थी। पारिवारिक पृष्ठभूमि के कारण वे युवावस्थामें अपनी भावनाओं को

काबू में रखते थे और अधिक जिम्मेदार होते थे। अपने से बड़ों का आदर करते थे और **परंपराओं के अनुसार चलते** थे। आधुनिक परिवेश के युवा बड़े-बूढ़ों के साथ बहुत कम समय व्यतीत करते हैं इसलिए सोच एवं दृष्टिकोण में अधिक अन्तर आ गया है। इसी अन्तर को 'पीढ़ी का अन्तर' कहते हैं। युवा पीढ़ी की यही नई सोच बुजुर्गों को अच्छी नहीं लगती।

२. यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ ढल सकने में सफल होती है,लेकिन यशोधर बाबू असफल रहते हैं,ऐसा क्यों ?

उत्तरः यशोधर बाबू **अपने आदर्श किशनदा** से अधिक प्रभावित हैं और आधुनिक परिवेश में बदलते हुए जीवन-मूल्यों और संस्कारों के विरूद्ध हैं। जबकि उनकी पत्नीअपने बच्चों के साथ खड़ी दिखाई देती हैं। वह अपने बच्चों के आधुनिक दृष्टिकोण से प्रभावित हैं। इसलिए **यशोधर बाबू की पत्नी समय के**

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

साथ परिवर्तित होती है, लेकिन यशोधर बाबू अभी भी किशनदा के संस्कारों और परंपराओं से चिपके हुए हैं।

३.'सिल्वर वैडिंग'कहानी के आधार पर पीढ़ी के अंतराल से होने वाले पारिवारिक अलगाव पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तरः सांस्कृतिक संरक्षण के लिए **स्वस्थ परंपराओं की सुरक्षा आवश्यक** है, किंतु **बदलते समय और परिवेश से सामंजस्य की भी उपेक्षा नहीं** की जानी चाहिए, अन्यथा सिल्वर वैडिंग के पात्रों की तरह बिखराव होने लगता है।

४.'सिल्वर वैंडिग'कहानी को ध्यान में रखते हुए **परंपराओं** और सांस्कृतिक संरक्षकों की वर्तमान में उपादेयता पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तरः**परंपराओं और संस्कृति से ही किसी देश की पहचान** कायम रहती है। सादगी से जीकर गृहस्थी को बचाया जा सकता है। यदि ऐसा न होता तो शायद यशोधर बाबू की संतानें पढ़-लिखकर योग्य न बनतीं ।

५."**सिल्वर वैडिंग**के कथानायक यशोधर बाबू एक आदर्श व्यक्ति हैं और नई पीढ़ी द्वारा उनके विचारों को अपनाना ही उचित है|"इस कथन के पक्ष-विपक्ष में तर्क दीजिए।

उत्तरः- **पक्षः** नयी पीढ़ी के युवा **उनकी सादगी और व्यक्तित्व के कुछेक प्रेरक पहलुओं** को लेकर सफल व संस्कारी नागरिक बन सकते हैं अन्यथा वे अपनी पहचान खो बैठेंगे।

विपक्षःपुरानी रूढ़ियों को छोड़कर ही नए समाज व नई पीढ़ी के साथ सामंजस्य बिठाया जा सकता हैअन्यथा विलगाव सुनिश्चित है।

६. सिल्वर वैडिंग कहानी की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः - संकेत-बिंदु-पीढ़ी के अन्तराल से पैदा हुई बिखराव की पीड़ा।

७. किशनदा की कौन-सी छवि यशोधर बाबू के मन में बसी हुई थी?

संकेत बिन्दु- 1.उनकी दफ्तर में विभिन्न रूपों की छवि,

2.सैर पर निकलने वाली छवि,

३. एक आदर्शवादी व्यक्ति के रूप में ,

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

४. परोपकारी व्यक्ति |

८ .'सिल्वर वैडिंग'कहानी का प्रमुख पात्र बार-बार किशनदा को क्यों याद करता है?इसे आप क्या मानते हैं उसकी सामर्थ्य या कमजोरी?औरक्यों ?

उत्तरः सामर्थ्य मानते हैं, वे **उनके प्रेरक थे**, उनसे अलग अपने को सोचना भी यशोधर बाबू के लिए मुश्किल था। जीवन का प्रेरणा-स्रोत तो सदा **शक्ति एवं सामर्थ्य**का सर्जक होता है।

९ . पाठ में 'जो हुआ होगा' वाक्य की कितनी अर्थ छवियाँ आप खोज सकते हैं?

उत्तरः यशोधर बाबू यही विचार करते हैं कि जिनके बाल-बच्चे ही नहीं होते,वे व्यक्ति **अकेलेपन के कारण स्वस्थ दिखने के बाद भी बीमार-से** हो जाते हैं और उनकी मृत्यु हो जाती है| जिसप्रकार यशोधर बाबू अपने आपको परिवार से कटा और अकेला पाते हैं उसीप्रकार **अकेलेपन से ग्रस्त** होकर उनकी मृत्यु हुई होगी। यह भी कारण हो सकता है कि उनकी **बिरादरी से घोर उपेक्षा मिली**, इस कारण वे सूख-सूख कर मर गए | किशनदा की मृत्यु के सही कारणों का पता नहीं चल सका। बस यशोधर बाबू यही सोचते रह गए कि किशनदा की मृत्यु कैसे हुई?जिसका उत्तर किसी के पास नहीं था।

१० .वर्तमान समय में परिवार की संरचना,स्वरूप से जुड़े आपके अनुभव इस कहानी से कहाँ तक सामंजस्य बिठा पाते हैं ?

उत्तरः **यशोधर बाबू और उनके बच्चों की सोच में पीढ़ीजन्य अंतराल** आ गया है। **यशोधर संस्कारों से जुड़ना** चाहते हैं और संयुक्त परिवार की संवेदनाओं को अनुभव करते हैं जबकि **उनके बच्चे अपने आप में जीना** चाहते हैं। अतः जरूरत इस बात की है कि **यशोधर बाबू को अपने बच्चों की सकारात्मक नई सोच का स्वागत** करना चाहिए,परन्तु यह भी अनिवार्य है कि आधुनिक पीढ़ी के **युवा भी वर्तमान बेतुके संस्कार और जीवन मूल्यों के प्रति आकर्षित न हों** तथा पुरानी पीढ़ी की अच्छाइयों को ग्रहण करें। यह शुरूआत दोनों तरफ से होनी चाहिए ताकि एक नए एवं संस्कारी समाज की स्थापना की जा सके।

११ . यशोधर बाबू के चरित्र की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तरः1. **<u>कर्मठ एवं परिश्रमी –</u>सेक्शन ऑफिसर** होने के बावजूद दफ्तर में देर तक काम करते थे | वे अन्य कर्मचारियों से अधिक कार्य करते थे |

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

2. **<u>संवेदनशील-</u>** यशोधर बाबू अत्यधिक संवेदनशील थे | वे यह बात स्वीकार नहीं कर पाते कि **उनका बेटा उनकी इजाजत लिए बिना** ही घर का सोफा सेट आदि खरीद लाता है, उनका साईकिल से दफ्तर जाने पर ऐतराज करता है, उन्हें दूध लेने जाने में असुविधा न हो इसलिए ड्रेसिंग गाउन भेंट करता है| **पत्नी उनकी बात न मानकर बच्चों के कहे अनुसार** चलती है | **बेटी विवाह के बंधन में बंधने से इंकार** करती है और उसके वस्त्रों में शालीनता नहीं झलकती | परिवारवालों से तालमेल न बैठने के कारण वे अपना अधिकतर समय घर से बाहर मंदिर में तथा सब्जीमंडी में सब्ज़ी खरीदते बिताते हैं |

3**<u>. परंपरावादी-</u>** वे परंपरावादी थे |आधुनिक समाज में बदलते समीकरणों को स्वीकार करने को तैयार नहीं थे इसलिए परिवार के अन्य सदस्यों से उनका तालमेल नहीं बैठ पा रहा था |

४. **<u>धार्मिक व्यक्ति-</u>**यशोधर बाबू एक धार्मिक व्यक्ति थे| वे अपना अधिकतर समय पूजा-पाठ और मंदिर में बिताते थे |

१२ . यशोधर बाबू जैसे लोग समय के साथ ढ़लने में असफल क्यों होते हैं?

उत्तरः ऐसे लोग साधारणतया किसी न किसी से प्रभावित होते हैं, जैसे यशोधर बाबू **किशन दा** से। ये **परंपरागत ढर्रे** पर चलना पसन्द करते हैं तथा बदलाव पसन्द नहीं करते। अतः समय के साथ ढ़लने में असफल होते हैं।

१३ . भरे-पूरे परिवार में यशोधर बाबू स्वयं को अधूरा-सा क्यों अनुभव करते हैं?

उत्तरःसंकेत बिन्दु - अपने प्राचीन दायरे से बाहर न निकल सकने के कारण वे स्वयं को अधूरा अनुभव करते हैं।

१४.''अभी तुम्हारे अब्बा की इतनी साख है कि सौ रुपए उधार ले सकें।'' किन परिस्थितियों में यशोधर बाबू को यह कहना पड़ा?

उत्तरःसंकेत बिन्दु- पुत्र द्वारा उनके निकट संबंधी की आर्थिक सहायता के लिए मनाही से आहत होकर ऐसा कहना पड़ा।

१५. 'सिल्वर वैडिंग' कहानी के तथ्य का विश्लेषण कीजिए।

उत्तरः संकेत बिन्दु - पीढ़ी के अंतराल को उजागर कर, वर्तमान समाज की इस प्रकार की सच्चाई से पर्दा उठाया गया है।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

१६.अपने बच्चों की तरक्की से खुश होने के बाद भी यशोधर बाबू क्यामहसूस करते हैं?

उत्तरः उनके बच्चे गरीब रिश्तेदारों के प्रति उपेक्षा का भाव रखते हैं। उनकी यह खुशहाली अपनों के बीच परायापन पैदा कर रही है, जो उन्हें अच्छा नहीं लगता।

१७.आजकल किशनदा जैसी जीवन-शैली अपनाने वाले बहुत कम लोग मिलते हैं, क्यों ?

उत्तर: किशन दा जैसे लोग मस्ती से जीते हैं, निःस्वार्थ दूसरों की सहायता करते हैं, जबकि आजकल सभी सहायता के बदले कुछ न कुछ पाने की आशा रखते हैं, बिना कुछ पाने की आशा रखे सहायता करने वाले बिरले ही होते हैं ।

१८ . यशोधर बाबू के बच्चों की कौन-सी बातें प्रशंसनीय हैं और कौन-सा पक्ष आपत्तिजनक है?

उत्तर- **प्रशंसनीय बातें**- १) महत्वाकांक्षी और प्रगतिशील होना | २)जीवन में उन्नति करना |

३)समय और सामर्थ्य के अनुसार घर में आधुनिक सुविधाएँ जुटाना |

आपत्तिजनक बातें - १) व्यवहार, २) पिता, रिश्तेदारों, धर्म और समाज के प्रति नकारात्मक भाव

३) मानवीय सम्बन्धों की गरिमा और संस्कारों में रूचि न लेना |

१९.आपकी दृष्टि में(पाठ से अलग) सिल्वर वैडिंग मनाने के और कौन से तरीके हो सकते हैं जो यशोधर बाबू को अच्छे लगते?

उत्तरः मंदिर जाकर,परिवार के साथ कहीं घूमने जाकर,पुत्र-पुत्रियों द्वारा

माता-पिता को उपहार देकर आदि।

२०. सिल्वर वैडिंग में चटाई का लहँगा किसे कहा गया है?

उत्तरः यह एक **प्रतीकात्मक प्रयोग** है जिसे यशोधर बाबू अपनी पत्नी के लिए प्रयोग करते हैं। उनकी पत्नी पुरानी परंपराओं को छोड़ आधुनिकता में ढ़ल गई है, स्वयं को मॉडर्न समझती है, इसलिए यशोधर बाबू ने उन्हें यह नाम दिया है। वे उन्हें 'शानयल बुढ़िया' तथा 'बूढ़ी मुँह मुहाँसे, लोग करें तमासे' कह कर भी चिढ़ाते हैं।

२१. यशोधर बाबू परिवार के बावजूद स्वयं को अधूरा क्यों मानते हैं?

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

उत्तर - यशोधर बाबू पुरानी परंपराओं को माननेवाले हैं, जबकि उनका सारा परिवार आधुनिक विचारधारा का है। **पीढ़ीगत अंतराल के कारण परिवार के साथ ताल-मेल न बिठा पाने के कारण** वे स्वयं को अधूरा समझते हैं।

<u>अन्य महत्त्वपूर्ण अभ्यास-प्रश्न:</u>

1. दफ्तर में यशोधर बाबू से कर्मचारी क्यों परेशान रहते थे?

2. यशोधर बाबू का अपने बच्चों के साथ कैसा व्यवहार था?

3. दफ्तर के बाद पंत जी क्या-क्या काम करते थे?

4. ऑफिस के साथियों ने यशोधर बाबू को किस बात की बधाई दी?

5. यशोधर बाबू तकिया कलाम के रूप में किस वाक्य का प्रयोग करते थे?इस तकिया कलाम का उनके व्यक्तित्व तथा कहानी के कथ्य से क्या संबंध है ?

6. पीढ़ी के अंतराल से व्यक्ति अकेला हो जाता है'- स्पष्ट करें।

७. अपने बेटे की बड़ी नौकरी पर यशोधर बाबू को क्या आपत्ति थी ?

<u>पाठ 2 जूझ: आनंद यादव</u>

<u>पाठ का सार</u> –'जूझ' पाठ आनंद यादव द्वारा रचित स्वयं के जीवन–संघर्ष की कहानी है| पढ़ाई पूरी न कर पाने के कारण, उसका मन उसे कचोटता रहता था |दादा ने अपने स्वार्थों के कारण उसकी पढ़ाई छुड़वा दी थी |वह जानता था कि दादा उसे पाठशाला नहीं भेजेंगे | आनंद जीवन में आगे बढ़ना चाहता था | वह जनता था कि खेती से कुछ मिलने वाला नहीं |वह पढ़ेगा-लिखेगा तो बढ़िया-सी नौकरी मिल जाएगी |

आनंद ने एक योजना बनाई कि वह माँ को लेकर गाँव के प्रतिष्ठित व्यक्ति दत्ता जी राव के पास जाएगा| दत्ता जी राव ने उनकी पूरी बात सुनी और दादा को उनके पास भेजने को कहा | दत्ता जी ने उसे खूब फटकारा, आनंद को भी बुलाया | दादा ने भी कुछ बातें रखीं कि आनंद को खेती के कार्य में मदद करनी होगी| आनंद ने उनकी सभी बातें सहर्ष मान लीं| आनंद की पढ़ाई शुरू हो गई| शुरु में कुछ शरारती बच्चों ने उसे तंग किया किन्तु धीरे-धीरे उसका मन लगने लगा| उसने कक्षा के मानीटर वसंत पाटिल से दोस्ती कर ली जिससे उसे ठीक प्रकार से पढ़ाई करने की प्रेरणा मिली| कई परेशानियों से जूझते हुए आनंद ने शिक्षा का दामन नहीं छोड़ा| मराठी पढ़ाने के लिए श्री सौंदलगेकर आए| उन्होंने आनंद के हृदय में एक गहरी छाप

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

छोड़ी| उसने भी कविताओं में रूचि लेनी प्रारम्भ की| उसने खेतों में काम करते –करते कविताएँ कंठस्थ की| मास्टर ने उसकी कविता बड़े ध्यान से सुनी| बालक का आत्मविश्वास बढ़ने लगा और उसकी काव्य-प्रतिभा में निखार आने लगा |

<u>प्रश्नोत्तर</u>-

१. जूझ कहानी के आधार पर दत्ता जी राव देसाई का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

उत्तर 1**. <u>समझदार व्यक्ति</u>**– दत्ता जी राव ने छोटे से बालक आनंद की बातों को सुना| फिर आनंद के दादा को बुलाया और आनंद को विद्यालय भेजने पर जोर दिया| उन्होंने दादा से इस प्रकार बातें की कि उन्हें शक ही नहीं हुआ कि ये सब उन्हें आनंद ने बताया है|

2. **<u>ग्रामीणों के मददगार</u>** – दत्ता जी गाँव के प्रतिष्ठित एवम प्रभावशाली व्यक्ति थे किंतु उन्होंने अपनी प्रतिष्ठा का दुरुपयोग नहीं किया| ग्रामीण उनके पास अपनी समस्याएँ लेकर आते थे| दत्ता जी उनकी समस्याओं को हल करने का प्रयास करते थे|

3.**<u>प्रभावशाली व्यक्तित्व</u>**– दत्ता जी गाँव के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे| सभी उन्हें बहुत मान देते थे| उनका व्यक्तित्व रोबीला था और ग्रामीण उनकी बात मान जाते थे|

२ . जूझ कहानी का उद्देश्य क्या है ? अथवा

‘विषम परिस्थितियों में भी विकास संभव है।’‘जूझ’ कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए|

उत्तरः इस कहानी का मुख्य उद्देश्य है कि **मनुष्य को संघर्ष करते रहना चाहिए**| कहानी में लेखक के जीवन के संघर्ष को, उसके परिवेश के साथ दिखलाया गया है। लेखक का शिक्षा-प्राप्ति हेतु **पिता से संघर्ष,कक्षा में संघर्ष,खेती में संघर्ष और अंत में उसकी सफलता** कहानी के उद्देश्य को स्पष्ट करते हैं। अतः समस्याओं से भागना नहीं चाहिए| पूरे आत्मविश्वास से उनका मुकाबला करना चाहिए| संघर्ष करने वाले को सफलता अवश्य मिलती है|

३ . ‘जूझ’ कहानी के शीर्षक की सार्थकता पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तरः जूझका अर्थ है –**संघर्ष**| यह कथा ,कथानायक के जीवन भर के संघर्ष को दर्शाती है| बचपन से अभावों में पला बालक, विपरीत परिस्थितियों पर विजय हासिल कर सका|अतः यदि मन में लगन हो, भरपूर आत्मविश्वास हो तो सफलता कदम चूमती है |

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

४ . 'जूझ' कहानी के आधार पर आंनदा के चरित्र की विशेषताएँ बताइए। अथवा

'जूझ'शीर्षक के औचित्य पर विचार करते हुए यह स्पष्ट करें कि क्या यह शीर्षक कथानायक की किसी केन्द्रीय चारित्रिक विशेषता को उजागर करता है?

उत्तरः 1**. पढ़ने की लालसा**- आनंदा पिता के साथ खेती का काम सँभालता था| लेकिन पढ़ने की तीव्र इच्छा ने उसे जीवन का एक उद्देश्य दे दिया और वह अपने भविष्य को एक सही दिशा देने में सफल होता है|

2. **वचनबद्धता**- आनंदा ने विद्यालय जाने के लिए पिता की जो शर्तें मानी थी उनका पालन हमेशा किया| वह विद्यालय जाने से पहले बस्ता लेकर खेतों में पानी देता| वह ढोर चराने भी जाता| पिता की बातों का अनुपालन करता|

3. **आत्मविश्वासी एवं कर्मठ बालक**–आनंदा के जीवन में अभाव ही थे| उसके पिता ने ही उसका पाठशाला जाना बंद करवा दिया था| किंतु उसने हिम्मत नहीं हारी, पूरे आत्मविश्वास के साथ योजनाबद्ध तरीके से आगे बढ़ा और सफल हुआ|

४ . **कविता के प्रति झुकाव**- आनंदा ने मास्टर सौंदलगेकर से प्रभावित होकर काव्य में रुचि लेनी प्रारम्भ की| वह खेतों में पानी देता, भैंस चराते समय भी कविताओं में खोया रहता था| धीरे-धीरे वह स्वयं तुकबंदी करने लगा| कविताएँ लिखने से उसमें आत्मविश्वास बढ़ा|

५ . आनन्दा के पिता की भाँति आज भी अनेक गरीब व कामगार पिता अपने बच्चों को स्कूल नहीं भेजना चाहतेथे, क्यों? आपकी दृष्टि में उन्हें किस प्रकार प्रेरित किया जा सकता है?

उत्तरः अधिकतर लोग **अशिक्षित होने के कारण** शिक्षा के महत्त्व को नहीं समझते| **अधिक बच्चे , कम आमदनी, दो अतिरिक्त हाथों से कमाई की लालसा** आदि इसके प्रमुख कारण हैं। उन्हें प्रेरित करने हेतु उन्हें जागरूक करना, शिक्षा का महत्त्व बताना,शिक्षित होकर जीवन स्तर में सुधार के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।

६ . सकारात्मक सृजनात्मकता से आत्मविश्वास को दृढ़ता मिलती है। जूझ कहानी के आधार पर समझाइए।

उत्तरः लेखक ने पढ़ाई में स्वयं को पिछड़ता हुआ पाया| किंतु शिक्षक सौदंलगेकर से प्रेरित होकर लेखक कुछ तुकबंदी करने लगा| धीरे –धीरे उसमें आत्मविश्वास बढ़ने लगा| सृजनात्मकता ने उसके जीवन को नया मोड़ दिया| अतः **लेखक के द्वारा कविता रच लेने से उसमें आत्मविश्वास का सृजन हुआ**।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

७. 'जूझ'कहानी के आधार पर बताइए कि एक प्रभावशाली शिक्षक किस तरह अपने विद्यार्थी का भविष्य सँवार सकता है? अथवा

आनन्दा से कवि डॉ. आनन्द यादव बनने की यात्रा में मास्टर सौंन्दलगेकर की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः मास्टर **सौंदलगेकर कुशल अध्यापक, मराठी के ज्ञाता व कवि,सुरीले ढंग से स्वयं कीव दूसरों की कविताएँ गाते थे**। आनन्दा को कविता या तुकबन्दी लिखने के प्रारम्भिक काल में उन्होंने उसका मार्गदर्शन व सुधार किया,उसका आत्मविश्वास बढ़ाया जिससे वह धीरे-धीरे कविताएँ लिखने में कुशल हो कर प्रतिष्ठित कवि बन गया।

८. आनन्दा कोपुनः स्कूल जाने पर क्या-क्या झेलना पड़ा ?

उत्तरः स्वयं से कम आयु के छात्रों के साथ बैठना पड़ा,वह अन्य छात्रों की हँसी का पात्र बना तथा उसे पिता की इच्छा के कारण घर व स्कूल दोनों में निरंतर काम करना पड़ा।

९ . स्कूल में मानीटर ने आनंदा को सर्वाधिक प्रभावित किया और कैसे?

उत्तरः मानीटर **बसंत पाटिल** ने उसे सर्वाधिक प्रभावित किया|वह **शांत व अध्ययनशील** छात्र था। आनंदा उसकी नकल कर हर काम करने लगा,धीरे-धीरे एकाग्रचित व अध्ययनशील बनकर आनन्दा भी कक्षा में सम्मान का पात्र बन गया।

१० . आपके दृष्टि से पढ़ाई-लिखाई के सम्बन्ध में लेखक और दत्ता जी राव का रवैया सही था या लेखक के पिता का?तर्क सहित उतर दीजिए।

उत्तरः लेखक का मत है कि **जीवन भर खेतों में काम करके कुछ भी हाथ आने वाला नहीं** है। पीढ़ी दर पीढ़ी खेतों में काम करके कुछ प्राप्त नहीं हो सका। वे मानते हैं कि यह खेती हमें गढ्ढे में धकेल रही है। **अगर मैं पढ़-लिख गया तो कहीं मेरी नौकरी लग जाएगी** या कोई व्यापार करके अपने जीवन को सफल बनाया जा सकता है। माँ-बेटा जब दत्ता जी राव के घर जाकर पूरी बात बताते हैं तो दत्ता जी राव पिता जी को बुलाकर खूब डाँटते हैं और कहते हैं कि तू सारा दिन क्या करता है। बेटे और पत्नी को खेतों में जोत कर तू सारा दिन साँड की तरह घूमता रहता है। कल से बेटे को स्कूल भेज, अगर पैसे नहीं हैं तो फीस मैं दूँगा। परन्तु पिता जी को यह सब कुछ बुरा लगा। दत्ता जी राव के सामने 'हाँ' करने के बावजूद भी वे आनन्द को स्कूल भेजने के पक्ष में नहीं थे। इस प्रकार लेखक और उनके पिताजी की सोच में एक बड़ा अन्तर है। हमारे खयाल से **पढ़ाई-लिखाई के सम्बन्ध में लेखक और दत्ता जी राव का रवैया लेखक के पिता की सोच से ज्यादा ठीक है** क्योंकि पढ़ने-लिखने से व्यक्ति का सर्वांगीण विकास होता है।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

अन्य महत्त्वपूर्ण अभ्यास-प्रश्न:

१. जूझ पाठ के आधार पर बताइए कि कौन, किससे, कहाँ जूझ रहा है तथा अपनी जूझ में कौन सफल होता है?

२. आनंदा का पिता कोल्हू जल्दी क्यों चलवाता था?

३. पाठशाला में आनंदा का पहला अनुभव कैसा रहा?

४. दत्ता राव के सामने रतनप्पा ने आनंदा को स्कूल न भेजने का क्या कारण बताया ?

५. आनंदा के पिता ने उसे पाठशाला भेजने की सहमति किस शर्त पर दी?

पाठ 3 अतीत में दबे पाँव: ओम थानवी

पाठ का सार–यह**ओम थानवी** के यात्रा-वृत्तांत और रिपोर्ट का मिला-जुला रूप है|उन्होंने इस पाठ में **विश्व के सबसे पुराने और नियोजित शहरों-मुअनजो-दड़ो तथा हड़प्पा** का वर्णन किया है | पाकिस्तान के सिंध प्रांत में मुअनजो-दड़ो ओर पंजाब प्रांत में हड़प्पा नाम के दो नगरों को पुरातत्वविदों ने खुदाई के दौरान खोज निकाला था|**मुअनजो-दड़ो ताम्रकाल का सबसे बड़ा शहर** था |मुअनजो-दड़ो अर्थात **मुर्दों का टीला**| यह नगर मानव निर्मित छोटे–छोटे टीलों पर बना था |मुअनजो-दड़ो में प्राचीन और बड़ा बौद्ध स्तूप है | इसकी नगर योजना अद्वितीय है| लेखक ने खंडहर हो चुके टीलों, स्नानागार, मृद-भांडों, कुओं–तालाबों, मकानों व मार्गों का उल्लेख किया है जिनसे शहर की सुंदर नियोजन व्यवस्था का पता चलता है| बस्ती में **घरों के दरवाजे मुख्य सड़क की ओर नहीं खुलते**, हर घर में जल निकासी की व्यवस्था है, सभी नालियाँ की ढकी हुई हैं, पक्की ईंटों का प्रयोग किया गया है|

नगर में चालीस फुट लम्बा ओर पच्चीस फुट चौड़ा एक **महाकुंड** भी है |इसकी दीवारें ओर तल पक्की ईंटों से बने हैं | कुंड के पास **आठ स्नानागार** हैं | कुंड में बाहर के अशुद्ध पानी को न आने देने का ध्यान रखा गया | कुंड में पानी की व्यवस्था के लिए कुंआ है | एक **विशाल कोठार** भी है जिसमें अनाज रखा जाता था |उन्नत खेती के भी निशान दिखते हैं -कपास, गेहूं, जौ, सरसों, बाजरा आदि के प्रमाण मिले हैं|

सिंधु घाटी सभ्यता में **न तो भव्य राजमहल मिलें हैं ओर ही भव्य मंदिर**| नरेश के सर पर रखा मुकुट भी छोटा है| मुअनजो-दड़ो सिंधु घाटी का सबसे बड़ा नगर है फिर भी इसमें भव्यता व आडम्बर का अभाव रहा है| उस समय के लोगों ने कला ओर सुरुचि को महत्त्व दिया| नगर-नियोजन, धातु एवं पत्थर की मूर्तियाँ, मृद-भांड ,उन पर चित्रित मानव ओर अन्य आकृतियाँ ,मुहरें, उन पर बारीकी से की गई चित्रकारी|

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

एक पुरातत्त्ववेत्ता के मुताबिक सिंधु सभ्यता की खूबी उसका सौंदर्य-बोध है जो "राजपोषित या धर्मपोषित न होकर समाजपोषित था|"

<u>प्रश्नोत्तर</u>–

१. 'सिन्धु सभ्यता साधन सम्पन्न थी, पर उसमें भव्यता का आडंबर नहीं था |' प्रस्तुत कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तरः दूसरी सभ्यताएँ राजतंत्र और धर्मतंत्र द्वारा संचालित थी । वहाँ बड़े-बड़े सुन्दर महल, पूजा स्थल, भव्य मूर्तियाँ, पिरामिड और मन्दिर मिले हैं। राजाओं, धर्माचार्यों की समाधियाँ भी मौजूद हैं। किंतु सिन्धु सभ्यता, **<u>एक साधन-सम्पन्न सभ्यता थी परन्तु उसमें राजसत्ता या धर्मसत्ताके चिह्न नहीं मिलते</u>।** वहाँ की नगर योजना,वास्तुकला,मुहरों,ठप्पों,जल-व्यवस्था,साफ-सफाई और सामाजिक व्यवस्था आदि की **<u>एकरूपता</u>**द्वारा उनमें अनुशासन देखा जा सकता है |सांस्कृतिक धरातलपर यह तथ्य सामने आता है कि सिन्धु घाटी की सभ्यता**, <u>दूसरीसभ्यताओं से अलग एवं स्वाभाविक</u>**, किसी प्रकार की **<u>कृत्रिमता एवं आडंबररहित</u>**थी जबकि अन्य सभ्यताओं में राजतंत्र और धर्मतंत्र की ताकत को दिखाते हुए भव्य महल , मंदिर ओर मूर्तियाँ बनाई गईं किंतु सिन्धु घाटी सभ्यता की **<u>खुदाई में छोटी-छोटी मूर्तियाँ, खिलौने, मृद-भांड, नावें मिली</u>** हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि सिन्धु सभ्यता सम्पन्न थी परन्तु उसमें भव्यता का आडंबर नहीं था।

२. 'सिन्धु सभ्यता की खूबी उसका सौन्दर्य बोध है जो राजपोषित न होकर समाज-पोषित था।' ऐसा क्यों कहा गया है?

उत्तरः सिन्धु सभ्यता **<u>मैं औजार तो बहुत मिलेहैं,परंतु हथियारों का भी प्रयोग होता रहा होगा , इसका कोई प्रमाण नहीं</u>**है। वे लोग अनुशासनप्रिय थे परन्तु यह अनुशासन किसी ताकत के बल के द्वारा कायम नहीं किया गया,बल्कि **<u>लोग अपने मन और कर्म से ही अनुशासन प्रिय</u>** थे। मुअनजो-दड़ो की खुदाई में एक दाढ़ी वाले नरेश की छोटी मूर्ति मिली है परन्तु यह मूर्ति किसी राजतंत्र या धर्मतंत्र का प्रमाण नहीं कही जा सकती। विश्व की अन्य सभ्यताओं के साथ तुलनात्मक अध्ययन से भी यही अनुमान लगाया जा सकता है कि सिन्धु सभ्यता की खूबी उसका सौन्दर्यबोध है जो कि समाज पोषित है, राजपोषित या धर्मपोषित नहीं है।

३. 'यह सच है कि यहाँ किसी आँगन की टूटी-फूटी सीढ़ियाँ अब आप को कहीं नहीं ले जातीं,वे आकाश की तरफ अधूरी रह जाती हैं। लेकिन उन अधूरे पायदानों पर खड़े होकर अनुभव किया जा सकता है

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

कि आप दुनिया की छत पर हैं, वहाँ से आप इतिहास को नहीं उस के पार झाँक रहे हैं।' इसके पीछे लेखक का क्या आशय है?

उत्तरः इस कथन से लेखक का आशय है कि इन टूटे-फूटे घरों की सीढ़ियों पर खड़े होकर आप **विश्व की सभ्यता के दर्शन**कर सकते हैं क्योंकि सिन्धु सभ्यता विश्व की महान सभ्यताओ में से एक है। सिन्धु सभ्यता **आडंबररहित एवं अनुशासनप्रिय** है। खंडहरों से मिले अवशेषों और इन टूटे-फूटे घरों से केवल सिन्धु सभ्यता का इतिहास ही नहीं देखा जा सकता है बल्कि उससे कहीं आगे **मानवता के चिह्न ओर मानवजाति के क्रमिक विकास** को भी देखा जा सकता है। कई प्रश्न - ऐसे कौन से कारण रहे होंगे कि ये महानगर आज केवल खंडहर बन कर रह गए हैं?, वे बड़े महानगर क्यों उजड़ गए?, उस जमाने के लोगों की वास्तुकला, कला ओर ज्ञान में रुचि, समाज के लिए आवश्यक मूल्य - अनुशासन, सादगी, स्वच्छता, सहभागिता आदिहमें मानवजाति के क्रमिक विकास पर पुनः चिंतन करने पर मजबूर कर देते हैं । इस प्रकार हम इन सीढ़ियों पर चढ़कर किसी इतिहास की ही खोज नहीं करना चाहते बल्कि सिन्धु सभ्यता के सभ्य मानवीय समाज को देखना चाहते हैं।

४. हम सिन्धु सभ्यता को जल-संस्कृति कैसे कह सकते हैं ?

उत्तरःसिन्धु सभ्यता एक जल-संस्कृति थी | **प्रत्येक घर में एक स्नानघर**था । घर के भीतर से पानी या **मैला पानी नालियों के माध्यम से** बाहर हौदी में आता है और फिर बड़ी नालियों में चला जाता है। कहीं-कहीं नालियाँ ऊपर से खुली हैं परन्तु अधिकतर **नालियाँ ऊपर सेबंद**हैं। इनकी **जलनिकासी व्यवस्था** बहुत ही ऊँचे दर्जे की था | नगर में **कुओं** का प्रबंध था । ये कुएँ पक्की ईटों के बने थे। सिन्धु सभ्यता से जुड़े इतिहासकारों का मानना है कि यह सभ्यता विश्व में पहली ज्ञात संस्कृति है जो कुएँ खोदकर भू-जल तक पहुँची। अकेले मुअनजो-दड़ों नगर में सात सौ कुएँ हैं।यहाँ का **महाकुंड** लगभग चालीस फुट लम्बा ओर पच्चीस फुट चौड़ा है|इस प्रकार मुअनजो-दड़ों में पानी की व्यवस्था सभ्य समाज की पहचान है।

५. मुअनजो-दड़ो की गृह-निर्माण योजना पर संक्षेप में प्रकाश डालिए|

उत्तर- मुअनजो-दड़ो नगर की **मुख्य सड़क के दोनों ओर घर** हैं परंतु किसी भी **घर का दरवाजामुख्य सड़क पर नहीं खुलता**। घर जाने के लिए मुख्य सड़क से गलियों में जाना पड़ता है,सभी **घरों के लिए उचित जल निकासी** व्यवस्था है। घर **पक्की ईंटों के बने** हैं|छोटे घरों में खिड़कियाँ नहीं थीं किंतु बड़े घरों में आंगन के भीतर चारों तरफ बने कमरों में खिड़कियाँ हैं| घर छोटे भी हैं ओर बड़े भी किंतु सभी घर कतार में बने हैं|

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

६. 'सिन्धु सभ्यता ताकत से शासित होने की अपेक्षा समझ से अनुशासित सभ्यता थी'- स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः**संकेत बिंदु** - खुदाई से प्राप्त अवशेषों में औजार तो मिले हैं किंतु हथियार नहीं| कोई खड्ग ,भाला, धनुष-बाण नहीं मिला|

तथा भव्य महलों व समाधियों के न होने से कह सकते हैं कि सिन्धु सभ्यता ताकत से नहीं समझ से अनुशासित थी।

७. संसार की मुख्य प्राचीन सभ्यताएँ कौन-कौन सी हैं?प्राचीनतम सभ्यता कौन-सी है उसकी प्रमाणिकता का आधार क्या है ?

उत्तरः मिस्र की नील घाटी की सभ्यता, मेसोपोटामिया की सभ्यता, बेबीलोन की सभ्यता, सिन्धु घाटी की सभ्यता। सबसे प्राचीन है सिन्धु घाटी की सभ्यता। प्रमाण है 1922में मिले हड़प्पा व

मुअनजो-दड़ोनगरों के अवशेष। ये नगर ईसा पूर्व के हैं।

८.सिन्धु घाटी की सभ्यता की विशिष्ट पहचान क्या है?

उत्तरः1. एक जैसे आकार की पक्की ईटों का प्रयोग, 2. जल निकासी की उत्कृष्ट व्यवस्था,

3. तत्कालीन वास्तुकला, 4. नगर का श्रेष्ठ नियोजन।

९ .मुअनजो-दड़ोमें पर्यटक क्या-क्या देख सकते हैं?

उत्तरः 1.बौद्ध स्तूप2. महाकुंड 3.अजायबघर आदि

१० . सिन्धु सभ्यता व आजकल की नगर निर्माण योजनाओं में साम्य व अन्तर बताइए।

उत्तरः **साम्य**-1. अच्छी जल निकास योजना,ढकी हुई नालियाँ, 2. नौकरों के लिए अलग आवास व्यवस्था, 3. पक्की ईंटों का प्रयोग।

अन्तर- नगर योजना, आधुनिक तकनीक का प्रयोग, अत्याधुनिक भवन–निर्माण सामग्री का प्रयोग|

११.कुलधरा कहाँ है?मुअनजो-दड़ोके खण्डहरों को देख कुलधरा की याद क्योंआती है?

उत्तरः कुलधरा **जैसलमेर के मुहाने पर पीले पत्थरों से बने घरों वाला सुन्दर गाँव** है। कुलधरा के निवासी 150 वर्ष पूर्व **राजा से तकरार होने पर गाँव खाली करके चले** गए। **उनके घर अब खण्डहर बन चुके** हैं, परंतु

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

ढ़हे नहीं |घरों की दीवारें और खिड़कियाँ ऐसी हैं मानो सुबह लोग काम पर गए हैं और साँझ होते ही लौट आएंगें |मुअनजो-दड़ोके खण्डहरों को देखकर कुछ ऐसा ही आभास होता है वहाँ घरों के खण्डहरों में घूमते समय किसी अजनबी घर में अनधिकार चहल-कदमी का अपराधबोध होता है| पुरातात्विक खुदाई अभियान की यह खूबी रही है कि सभी वस्तुओं को बड़े सहेज कर रखा गया | अतः कुलधरा की बस्ती और मुअनजो-दड़ोके खण्डहर अपने काल के इतिहास का दर्शन कराते हैं।

<u>अन्य महत्त्वपूर्ण अभ्यास-प्रश्न</u>:

१. सिन्धु घाटी के निवासी खेती करते थे- इस कथन को सिद्ध कीजिए।

२. 'टूटे-फूटे खण्डहर सभ्यता और संस्कृति के इतिहास के साथ-साथ धड़कती जिन्दगियों के अनछुए समयों का दस्तावेज होते हैं।' इस कथन का भाव स्पष्ट कीजिए।

३.आज जल संकट एक बड़ी समस्या है| ऐसे में सिन्धु सभ्यता के महानगर मुअनजो-दड़ो की जल व्यवस्था से क्या प्रेरणा लीजा सकती है ? भावी जल संकट से निपटने के लिए आप क्या सुझाव देंगे ?

४.मुअनजो-दड़ोके अजायबघर में कौन-कोन सी वस्तुएँ प्रदर्शित थीं ?

५.सिंधु सभ्यता अन्य सभ्यताओं से किस प्रकार भिन्न है ?

६.मुअनजो-दड़ोकी प्रमुख विशेषताएँ लिखिए |

७. सिंधुघाटी की सभ्यता लो-प्रोफाइल है-स्पष्ट कीजिए ?

८. लेखक ने प्राचीन लैंडस्केप किसे कहा है ?उसकी क्या विशेषता है?

९. ताम्रकाल के दो सबसे बड़े नियोजित शहर किन्हें माना गया है और क्यों ?

<u>पाठ 4 : डायरी के पन्ने: ऐन फ्रैंक</u>

<u>पाठ का सार</u> – 'डायरी के पन्ने' पाठ में '**द डायरी ऑफ ए यंग गर्ल**' नामक **ऐन फ्रैंक** की डायरी के कुछ अंश दिए गए हैं| 'द डायरी ऑफ ए यंग गर्ल' **ऐन फ्रैंक** द्वारा दो साल अज्ञातवास के दरम्यान लिखी गई थी| **१९३३** में फ्रैंकफर्ट के नगरनिगम चुनाव में **हिटलर की नाजी पार्टी जीत** गई| तत्पश्चात **यहूदी-विरोधी प्रदर्शन** बढ़ने लगे | **ऐन फ्रैंक का परिवार** असुरक्षित महसूस करते हुए **नीदरलैंड के एम्सटर्डम शहर में जा**

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

बसा |द्वितीय विश्वयुद्ध की शुरुआत तक(१९३९) तो सब ठीक था| परंतु १९४० में नीदरलैंड पर जर्मनी का कब्ज़ा हो गया ओर यहूदियों के उत्पीड़न का दौर शुरु हो गया| इन परिस्थितियों के कारण **१९४२ के जुलाई मास में फ्रैंक परिवार**जिसमें माता-पिता,तेरह वर्ष की ऐन ,उसकी बड़ी बहन मार्गोट तथा दूसरा परिवार – **वानदान परिवार** ओर उनका बेटा पीटरतथा इनके साथ एक अन्य व्यक्ति **मिस्टर डसेल** दो साल तक गुप्त आवास में रहे| गुप्त आवास में इनकी सहायता उन कर्मचारियों ने की जो कभी मिस्टर फ्रैंक के दफ्तर में काम करते थे||'द डायरी ऑफ ए यंग गर्ल' **ऐन फ्रैंक** द्वारा उस दो साल अज्ञातवास के दरम्यान लिखी गई थी|अज्ञातवास उनके पिता **मिस्टर ऑटो फ्रैंक का दफ्तर** ही था| ऐन फ्रैंक को तेरहवें जन्मदिन पर एक डायरी उपहार में मिली थी ओर उसमें उसने अपनी एक गुड़िया-किट्टी को सम्बोधित किया है|

ऐन**अज्ञातवास में पूरा दिन**– पहेलियाँ बुझाती, अंग्रेज़ी व फ्रेंच बोलती, किताबों की समीक्षा करती, राजसी परिवारों की वंशावली देखती, सिनेमा ओर थिएटर की पत्रिका पढ़ती और उनमें से नायक-नायिकाओं के चित्र काटतेबिताती थी| वह मिसेज वानदान की हर कहानी को बार-बार सुनकर बोर हो जाती थी ओर मि. डसेल भी पुरानी बातें– घोड़ों की दौड़, लीक करती नावें, चार बरस की उम्र में तैर सकने वाले बच्चे आदि सुनाते रहते|

उसने युद्ध संबंधी जानकारी भी दी है- कैबिनेट मंत्री **मि. बोल्के स्टीन** ने लंदन से डच प्रसारण में यह **घोषणा की थी कि युद्ध के बाद युद्ध के दौरान लिखी गईं डायरियों का संग्रह** किया जाएगा, वायुयानों से तेज़ **गोलाबारी**, **हज़ार गिल्डर के नोट अवैध** घोषित किए गए | हिटलर के घायल **सैनिकों में हिटलर से हाथ मिलाने का जोश** , **अराजकता** का माहौल- कार, साईकिल की चोरी, घरों की खिड़की तोड़ कर चोरी, गलियों में लगी बिजली से चलने वाली घड़ियाँ, सार्वजनिक टेलीफोन चोरी कर लिए गए|

ऐन फ्रैंक ने **नारी स्वतंत्रता** को महत्त्व दिया,उसने नारी को एक सिपाही के बराबर सम्मान देने की बात कही| एक **तेरह वर्षीय किशोरी के मन की बेचैनी** को भी व्यक्त किया- जैसे मि. डसेल की झाँट-फटकार ओर उबाऊ भाषण, दूसरों की बातें सुनकर मिसेज फ्रैंक का उसेडाँटना ओर उस पर अविश्वास करना, बड़ों के द्वारा उसके काम ओर केशसज्जा पर टीका-टिप्पणी करना, सिनेमा की पत्रिका खरीदने पर फिज़ूलखर्ची का आरोप लगाना, पीटर द्वारा उसके प्रेम को उजागर न करना आदि|

ऐन फ्रैंक की डायरी के द्वारा **द्वितीय विश्वयुद्ध की विभीषिका, हिटलर एवं नाजियों द्वारा यहूदियों का उत्पीड़न, डर, भुखमरी, गरीबी, आतंक, मानवीय संवेदनाएँ, प्रेम, घृणा, तेरह साल की उम्र के सपने, कल्पनाएँ, बाहरी दुनिया से अलग-थलग पड़ जाने की पीड़ा, मानसिक ओर शारीरिक जरूरतें, हँसी-मज़ाक, अकेलापन** आदि का जीवंत रूप देखने को मिलता है |

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

<u>प्रश्नोत्तर –</u>

१. ‘‘ऐन की डायरी अगर एक ऐतिहासिक दौर का जीवंत दस्तावेज है, तो साथ ही उसके निजी

सुख-दुःख और भावनात्मक उथल-पुथल का भी। इन पृष्ठों में दोनों का फर्क मिट गया है। ’’ इस कथन पर विचार करते हुए अपनी सहमति या असहमति तर्कपूर्वक व्यक्त करें।

उत्तरःऐन की डायरी अगर एक ऐतिहासिक दौर का जीवंत दस्तावेज है, तो साथ ही उसके निजी सुख-दुःख और भावनात्मक उथल-पुथल का भी क्योंकि इसमें ऐन ने द्वितीय विश्वयुद्ध के समय हॉलैंड के यहूदी परिवारों की अकल्पनीय यंत्रणाओं का वर्णन करने के साथ-साथ, वहाँ की राजनैतिक स्थिति एवं युद्ध की विभीषिका का जीवंत वर्णन किया है।वायुयानों से तेज़ **गोलाबारी**, **हज़ार गिल्डर के नोट अवैध** घोषित किए गए , हिटलर के घायल **सैनिकों में हिटलर से हाथ मिलाने का जोश** , **अराजकता** का माहौलआदि| साथ हीयह डायरी, ऐन के पारिवारिक सुख-दुःख और भावनात्मक स्थिति को प्रकट करती है- गरीबी, भुखमरी,अज्ञातवास में जीवन व्यतीत करना, दुनिया से बिलकुल कट जाना ,पकड़े जाने का डर, आतंक। यह डायरी एक ओर वहाँ के **राजनैतिक वातावरण में सैनिकों की स्थिति, आचरण व जनता पर होने वाले अत्याचार** दिखाती हैं तो दूसरी ओर**एक तेरह वर्ष की किशोरी की मानसिकता, कल्पना का संसार ओर उलझन को भी**दिखाती है जो ऐन की आपबीती है। इस तरह यह डायरी ऐतिहासिक दस्तावेज होने के साथ-साथ ऐन के जीवन के सुख-दुख का चित्रण भी है ।

२. ‘‘यह साठ लाख लोगों की तरफ से बोलने वाली एक आवाज है। एक ऐसी आवाज जो किसी सन्त या कवि की नहीं, बल्कि एक साधारण-सी लड़की की है।’’ इल्या इहरनबुर्ग की इस टिप्पणी के संदर्भ में ऐन फ्रैंक की डायरी के पठित अंशों पर विचार करें।

उत्तरः उस समय यूरोप में लगभग साठ लाख यहूदीथे।**द्वितीय विश्वयुद्ध में नीदरलैंड पर जर्मनी** का कब्ज़ा हो गया और **हिटलर की नाजी फौज ने** यहूदियों को विभिन्न प्रकार से यंत्रणाएं देने लगे | उन्हें तरह-तरह के **भेदभाव पूर्ण ओर अपमानजनक नियम-कायदों को मानने के लिए बाध्य** किया जाने लगा |गेस्टापो (हिटलर की खुफिया पुलिस) छापे मारकर यहूदियों को अज्ञातवास से ढूँढ़ निकालती ओर **यातनागृह** में भेज देती| अतः चारों तरफ **अराजकता** फैली हुई थी। **यहूदी अज्ञातवास में निरंतर अंधेरे कमरों में जीने को मजबूर**थे।उन्हें एक अमानवीय जीवन जीने को बाध्य होना पड़ा|**हिटलर की नाजी फौज**का खौफ उन्हें हरवक्त आतंकित करता रहता था | ऐन ने डायरी के माध्यम से न केवलनिजी सुख-दुःख और भावनाओं को व्यक्त किया,बल्कि लगभग साठ लाख यहूदी समुदाय की दुख भरी जिन्दगी को लिपिबद्ध किया है। इसलिए इल्या इहरनबुर्ग की यह टिप्पणी कि ‘‘यह साठ लाख लोगों की तरफ से बोलने

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

वाली एक आवाज है। एक ऐसी आवाज जो किसी संत या कवि की नहीं, बल्कि एक साधारण-सी लड़की की है।'सर्वमान्य एवं सत्य है।

३. ऐन फ्रैंक कौन थी?उसने अपनी डायरी में किस काल की घटनाओं का चित्रण किया है?यह क्यों महत्वपूर्ण है?

उत्तर:. ऐन फ्रैंक एक यहूदी लड़की थी। उसने अपनी डायरी में द्वितीय विश्वयुद्ध (1939-1945) के दौरान **हिटलर की नाजी फौज ने** यहूदियों को विभिन्न प्रकार से यंत्रणाएं दीं| यह डायरी युद्ध के दौरान फैली अराजकता और राजनेतिक परिदृश्य को दर्शाती है| यह नाजियों द्वारा यहूदियों पर किए गए जुल्मों का एक प्रामाणिक दस्तावेज है और साथ ही साथ एक तेरह वर्षीय किशोरी की भावनाएँ और मानसिकता को समझाने में सहायक है।

४. डायरी के पन्ने पाठ में मि. डसेल एवं पीटर का नाम कई बार आया है। इन दोनों का विवरणात्मक परिचय दें।

उत्तरः मि.डसेल- ऐन के पिता के साथ काम करते थे। वे ऐन व परिवार के साथ अज्ञातवास में रहे थे। डसेल **उबाऊ लंबे-लंबे भाषण** देते थे और अपने जमाने के किस्से सुनाते रहते थे। ऐन को अक्सर डाँटते थे । वे चुगलखोर थे और ऐन की **मम्मी से ऐन की सच्ची-झूठी शिकायतें** करते थे ।

पीटर- **मिस्टर और मिसेज वानदान का बेटा** था |वह **ऐन का हमउम्र** था। ऐन का उसके प्रति आकर्षण बढ़ने लगा था और वह यह मानने लगी थी कि वह उससे प्रेम करती है।ऐन के जन्मदिन पर पीटर ने उसे फूलों का गुलदस्ता भेंट किया था| किंतु पीटर सबके सामने प्रेम उजागर करने से डरता था| वह साधारणतया शांतिप्रिय, सहज व आत्मीय व्यवहार करने वाला था।

५. . किट्टी कौन थी?ऐनफ्रैंक ने किट्टी को संबोधित कर डायरी क्यों लिखी?

उत्तरः 'किट्टी'**ऐन फ्रैंक की गुड़िया** थी। गुड़िया को मित्र की भाँति संबोधित करने से **गोपनीयता भंग होने का डर न था**।अन्यथा नाजियों द्वारा अत्याचार बढ़ने का डर व उन्हें अज्ञातवास का पता लग सकता था।| ऐन ने स्वयं (एक **तेरह वर्षीय किशोरी) के मन की बेचैनी** को भी व्यक्त करने का ज़रिया किट्टी को बनाया |वह हृदय में उठ रही कई भावनाओं को दूसरों के साथ बाँटना चाहती थी किंतु अज्ञातवास में उसके लिए किसी के पास समय नहीं था| मि. डसेल की झाँट-फटकार ओर उबाऊ भाषण ,दूसरों के द्वारा उसके बारे में सुनकर मम्मी (मिसेज फ्रैंक) का उसेझाँटना ओर उस पर अविश्वास करना, **बड़ों का उसे**

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

लापरवाह और तुनकमिजाज मानना और उसे छोटी समझकर उसके विचारों को महत्त्व न देना , उसके ह्रदय को कचोटता था |अतः उसने किट्टी को अपना हमराज़ बनाकर डायरी में उसे ही संबोधित किया|

६ 'ऐन फ्रैंक की डायरी यहूदियों पर हुए जुल्मों का जीवंत दस्तावेज है'पाठ के आधार पर यहूदियों पर हुए अत्याचारों का विवरण दें।

उत्तरः हिटलर की नाजी सेना ने यहूदियों को कैद कर **यातना शिविरों** में डालकर यातनाएँ दी। उन्हें गैस चैंबर में डालकर मौत के घाट उतार दिया जाता था। कई **यहूदी भयग्रस्तहोकर अज्ञातवास में**चले गए जहाँ उन्हें अमानवीय परिस्थितियों में जीना पड़ा| अज्ञातवास में उन्हें सेन्धमारों से भी निबटना पड़ा।। उनकी **यहूदी संस्कृति** को भी कुचल डाला गया।

७. 'डायरी के पन्ने'पाठ किस पुस्तक से लिया गया है?वह कब प्रकाशित हुई?किसने प्रकाशित कराई?

उत्तरः यह पाठ ऐनफ्रैंक द्वारा डच भाषा में लिखी गई **'द डायरी ऑफ ए यंग गर्ल'** नामक पुस्तक से लिया गया है। यह **१९४७** में ऐन फ्रैंक की मृत्यु के बाद उसके **पिता मिस्टर ऑटो फ्रैंक** ने प्रकाशित कराई।

<u>अन्य महत्त्वपूर्ण अभ्यास-प्रश्न:</u>

१."काश, कोई तो होता जो मेरी भावनाओं को गंभीरता से समझ पाता| अफसोस, ऐसा व्यक्ति मुझे अब तक नहीं मिला.... "| क्या आपको लगता है किऐन के इस कथन में उसके डायरी लेखन का कारण छुपा हुआ है ?

२. अज्ञातवास में उबाऊपन दूर करने के लिए ऐन फ्रैंक व वान परिवार क्या करते थे ?

३. डच मंत्री कि किस घोषणा से ऐन रोमांचित हो उठी?

४. ऐन के अनुसार युद्ध में घायल सैनिक गर्व का अनुभव क्यों कर रहे थे ?

५. 'हर कोई जानता था कि बुलावे का क्या मतलब होता है'| ऐन की डायरी के आधार पर लिखिए |

६. 'प्रकृति ही तो एक ऐसा वरदान है, जिसका कोई सानी नहीं है।'ऐसा क्यों कहा गया है?

Downloaded from www.studiestoday.com